मुख्य परीक्षा

प्रश्न- मानव व्यवहार परीक्षण के द्वितीय चरण के अवयवों को बताते हुए "इरादा" को उदाहरण सहित विस्तारपूर्वक समझाइए।

(250 शब्द)

Elucidating the determinants of second stage of Examining Human Behaviour, explain 'Intension' with examples.

(250 Words)

मॉडल उत्तर

1. मनुष्य के आचरण की नैतिकता के परीक्षण के लिए दूसरे चरण में हम आचरण का गहरा अध्ययन करते हैं। इस चरण के अंतर्गत तीन महत्त्वपूर्ण अवयवों का विश्लेषण किया जाता है, जो इस प्रकार हैं-

1. वस्तु 2. परिस्थिति 3. इरादा।

1. वस्तु - यहाँ 'वस्तु' शब्द आचरण की प्रकृति के लिए प्रयोग में लाया गया है। आचरण की प्रकृति सामान्यत: सकारात्मक या नकारात्मक हो सकती है। अन्य अवयवों को निष्क्रिय कर यदि हम केवल वस्तु का परीक्षण करें, तो कोई भी आचरण सकारात्मक या नकारात्मक के रूप में पूर्व निधारित मान लिया गया है। वस्तु आचरण की नैतिकता परीक्षण में प्रारम्भिक अवयव है लेकिन संपूर्ण नहीं।

2. परिस्थिति - परिस्थिति वह अवयव है, जो किसी भी वस्तु को विशिष्टता प्रदान करती है अर्थात्, जब आचरण की जाँच करनी हो तो हमें यह देखना होता है कि उसमें कौन-से विशिष्ट अवयव की पृष्ठभूमि है। अधीनस्थ बालक, अपरिपक्व, अक्षम, अनैतिक आदि के नैतिक उत्तरदायित्व कम होते हैं। वहीं अधिकारी, वयस्क, परिपक्व, शिक्षित आदि के नैतिक उत्तरदायित्व अधिक होते हैं। सामान्यत: व्यवहार में लोग सच का प्रयोग कर व्यक्तिगत लाभ प्राप्त करते हुए दूसरों के हित का नुकसान कर सकते हैं। सही समय या स्थान पर झूठ भी बोला जाए, तो वह झूठ नैतिक हो सकता है।

3. इरादा - आचरण का नैतिक परीक्षण करते समय कर्त्ता के इरादे को ध्यान में रखा जाना आवश्यक है। यदि कर्त्ता उचित इरादे से कोई कार्य करता है, तो हम उसके आचरण को नैतिक कहेंगे, भले ही उस आचरण से आने वाला प्रतिफल अशुभ हो। ठीक इसके विपरीत गलत इरादे से किया गया काम उस आचरण को अनैतिक करार देता है, भले ही उस आचरण का प्रतिफल सर्वहित में हो। जैसे-अंग्रेजी सरकार द्वारा आधुनिक संस्थाओं व संरचनाओं की स्थापना भारत के हित में थी, लेकिन इसके पीछे की मंशा देश का सामाजिक-आर्थिक दोहन थी।

कई बार परिस्थितियों से आचरण की नैतिकता सिद्ध नहीं हो पाती क्योंकि परिस्थितियां कभी-कभी जटिल होती हैं। उनको समझना व उनका उचित विश्लेषण संभव नहीं हो पाता, तब इरादा ही नैतिकता स्थापित करने में प्रयोग में लाया जाता है। इसके अलावा कभी-कभी किसी आचरण के दो प्रतिफल होते हैं-1. सकारात्मक, 2. नकारात्मक। इस प्रकार का प्रतिफल नैतिकता निर्धारण में दुविधा को जन्म देता है। इस परिस्थिति को "Circumstances of double effect" भी कहते हैं। ऐसी परिस्थिति में इरादा नैतिकता निर्धारण का सर्वश्रेष्ठ मापदंड है।

वैसे तो वस्तु और परिस्थिति तथा इरादे के आधार पर उचित-अनुचित को स्थापित किया जा सकता है। इससे वस्तु में अंतर्निहित सकारात्मक या नकारात्मक भाव बदल नहीं जाता। जैसे-किसी अनाथ का जीवन चलाने हेतु चोरी करना या शौक पूरा करने के लिए चोरी करना। चोरी दोनों परिस्थितियों में नकारात्मक आचरण है। यदि किसी अनाथ का जीवन चलाने हेतु कड़ी मेहनत माध्यम बनाया जाए, तो वह चोरी की तुलना में बेहतर विकल्प व ज्यादा उचित प्रक्रिया होगी। अत: वस्तुरूपी अवयव को कभी भी तुच्छ या कम प्रभावी अवयव मानना एक उचित आचरण परीक्षण नहीं कहा जा सकता है।